

तलाकशुदा महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक और मानसिक स्थिति का विश्लेषण

डॉ. नन्द किशोर कुमावत^{1*}, चित्रा चन्द्रावत²

¹ शोध निर्देशक अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर

² शोधार्थी अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश - आधुनिक भारतीय समाज में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में महिलाओं की रोजगार दर बढ़ रही है। तलाक की दर महिलाओं के रोजगार की दर के समानांतर बढ़ रही है। शहरी क्षेत्र में महिला रोजगार दर अधिक है और ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्रों में तलाक की दर भी अधिक है। तलाकशुदा शब्द अपने आप में अपमानजनक और दर्दनाक है। बढ़ती तलाक दर से अकेलापन बढ़ सकता है और अकेलापन आत्महत्या दर बढ़ा सकता है। आधुनिक दुनिया में समाज के हर वर्ग की सबसे बड़ी समस्या यह है कि अधिकार की बात तो सभी करते हैं, लेकिन कर्तव्य की बात कोई नहीं करता। मानव सभ्यता के सभी चरणों में तलाक एक सामाजिक बुराई के रूप में देखा गया। दूसरी ओर, आधुनिक समाज में शिक्षित और अशिक्षित दोनों वर्ग अभी भी तलाक को एक सामाजिक बुराई के रूप में देखते हैं। वर्तमान अध्ययन द्वितीयक व प्राथमिक तथ्यों के आधार पर तलाक के कारणों और परिणामों को जानने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख शब्द - तलाक, बुराई, सभ्यता, मनोवैज्ञानिक।

-----X-----

परिचय

भारतीय दर्शन के अनुसार विवाह के लिए जोड़िया स्वर्ग में बनती है परंतु वर्तमान में यह जोड़िया धरती पर आकर टूटने लगी है। आधुनिक समाज में धार्मिक दर्शन का महत्व कम होता जा रहा है। दम्पतियों के मध्य छोटे-छोटे मुद्दों को लेकर तनाव बढ़ता जा रहा है और इसकी परिणति तलाक के रूप में हो रही है। महिला शिक्षा और जागरूकता के साथ बढ़ती विवाह की आयु, कैरियर को लेकर चिंतित युवा, प्रेम विवाह और टूटते संयुक्त परिवार भारतीय समाज में बढ़ती तलाक की दर का एक प्रमुख कारण है। बच्चे होने पर महिलाओं का जीवन दयनीय हो जाता है। बहुत सारी सामाजिक एजेंसियां और सामाजिक कार्यकर्ता पुरुषों और महिलाओं के लिए उपलब्ध कानूनों और अधिकारों के बारे में जागरूकता की दिशा में काम कर रहे हैं लेकिन परिवार और परिवार के बाहर पति और पत्नी के कर्तव्यों के प्रति कोई काम नहीं कर रहा है। केवल संत महात्मा ही कुछ अवसरों पर पति-पत्नी के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में बात करते हैं, अक्सर नहीं। इस प्रकार धार्मिक समुदाय में तलाक की दर कम

है। बहुत सारे मामले उपलब्ध हैं जहां कानून को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है और पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा इसका दुरुपयोग किया जाता है।

जैसा कि पिछले अध्ययनों से पता चलता है कि प्रेम विवाह अरेंज मैरिज की तुलना में अधिक जोखिम भरा होता है। अभिलेखों के अनुसार, 50 प्रतिशत प्रेम विवाह टूट जाते हैं, जबकि केवल 30 प्रतिशत अरेंज मैरिज तलाक अदालतों में समाप्त होती हैं।

तलाक के कारण

महिलाओं को उनके पतियों के बराबर नहीं माना जाता है, तो इस तरह के असमान व्यवहार से जोड़ों में फूट पड़ जाती है, ऐसे छोटे-छोटे मुद्दे शिक्षित वर्ग में तलाक का प्रमुख कारण हैं। व्यभिचार, विवाहेतर संबंध, विश्वास की कमी, संदेह, नपुंसकता और समझ की कमी दम्पतियों के बीच संघर्ष तलाक के अन्य कारण हैं। अगर पत्नी की स्थिति बेहतर है, तो यह अहंकार के टकराव के कारण जोड़ों में तनाव भी पैदा करता है।

डॉ. नन्द किशोर कुमावत^{1*}, चित्रा चन्द्रावत²

परिवार न्यायालय के अनुसार, महिलाएं अब मामले को अदालत में ले जाने से पहले दो बार नहीं सोचती हैं। वे जानती हैं कि वे गुजारा भत्ता (पति की संपत्ति का एक तिहाई) की मांग कर सकती हैं और फिर एक सामान्य शांतिपूर्ण जीवन जी सकती हैं। 2009 में, दिल्ली में 1,36,000 विवाह संपन्न हुए, इस आंकड़े में से 10,000 तलाक अदालतों में समाप्त हुए। महिलाओं का एक बड़ा वर्ग जानता है कि कानून के कुछ अनुच्छेद महिलाओं के पक्ष में हैं, उदाहरण के लिए, विवाह में क्रूरता और यातना से संबंधित धारा 498ए आईपीसी के तहत दर्ज मामले पति और उनके परिवार के सदस्यों को परेशान करने का एक साधन बन गए हैं। वकील मुश्किल से मदद करने की कोशिश करते हैं। वे चीजों को और खराब कर देते हैं।

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2008 प्रचलन में आया, 498 ए के तहत मामलों की संख्या में कमी आई है। उनके अनुसार, 80 प्रतिशत अरेस्ट विवाहों में एक झंझट भरे विवाद के बाद भी जीवित रहने की संभावना होती है। लेकिन प्रेम विवाह में, सुलह की बहुत कम संभावना है। तलाक की बढ़ती दर भारत में प्रमुख सामाजिक समस्याएं पैदा कर सकती है।

सभी धार्मिक और सामुदायिक नेताओं को जीवन में विवाह के महत्व के बारे में बात करनी चाहिए और अलगाव के बाद उत्पन्न होने वाली जटिलताओं पर भी चर्चा करनी चाहिए। तलाक सभी महिलाओं और पुरुषों का अधिकार है यह अलग-अलग आधारों पर प्रदान किया जाता है। जब वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता है तो जीने की दयनीय स्थिति से अलग हो जाना ही बेहतर है। भारत में, कानून भी युगल को आपसी आधार पर अलग होने की अनुमति देता है। भारतीय संविधान महिलाओं को तब तलाक के लिए फाइल करने की अनुमति देता है, जब वह अपने साथी के साथ असहज महसूस करती है। जैसा कि इतिहास से पता चलता है कि हमारे देश में ग्रामीण और शहरी दोनों जगहों पर महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हमारे देश में अलगाव की पहल करने वाली महिलाओं का प्रतिशत बहुत कम है।

तलाक का प्रचलन

भारतीय समाज में प्रमुख खतरों में से एक तलाक की दर में वृद्धि है जो प्रमुख सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से भरी हुई है। समग्र रूप से तलाक हमारे समाज में एक महामारी की तरह दिखता है जो समाज के सभी वर्गों में बहुत तेजी से फैल रहा है। तलाक के बाद बच्चे एकल माता-पिता के साथ रहते हैं जो उनके विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। दुनिया के विकसित देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, कोरिया, कनाडा, यूरोपीय संघ के सदस्य, यूनाइटेड किंगडम और कुछ अन्य विकसित राष्ट्रमंडल देशों में बीसवीं शताब्दी के अंतिम छमाही में

तलाक की दर में वृद्धि हुई है। यह माना जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में तलाक की दर दुनिया में सबसे अधिक है और यह मुख्य रूप से उनके घर में पति और पत्नियों की बदलती भूमिका, कम उम्र में शादी, बेवफाई, विवाहेतर संबंध, घरेलू हिंसा, अस्थिर वित्तीय स्थिति और मनोवैज्ञानिक अक्षमता इसके कारण है। यह सब समग्र रूप से सामाजिक स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है और निश्चित रूप से यह लोगों के बीच सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक संघर्ष का कारण हो सकता है।

तलाक बच्चों की भावनात्मक समस्याओं, किशोर गर्भावस्था, नशीली दवाओं और शराब की लत, धूम्रपान, अपराध और गरीबी का कारण बन सकता है। भारत में सभी प्रमुख धर्मों का अपना निजी विवाह कानून है जो उनके समुदाय के भीतर तलाक संबंधी मामलों को नियंत्रित करता है। बौद्ध, सिख और जैन सहित हिंदू, हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 द्वारा शासित हैं; भारतीय तलाक अधिनियम, 1869 द्वारा ईसाई; पारसी विवाह और तलाक अधिनियम, 1936 द्वारा पारसी; और मुस्लिम विवाह अधिनियम, 1939 के द्वारा मुस्लिमों को वह आधार प्रदान करता है जिस पर महिलाएं तलाक प्राप्त कर सकती हैं।

तलाक और बच्चे

पूरी दुनिया में, महिलाओं, पुरुषों और बच्चों के जीवन में तलाक सबसे तनावपूर्ण घटना है जो पारिवारिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती है। बच्चे अपने माता-पिता के प्यार को खो देते हैं और अपने जीवन में एक बड़ी कमी महसूस करते हैं। मासूम और प्यारे बच्चों का जीवन अब चिंता, क्रोध और उदासी से भरा हुआ है। माता-पिता के शत्रुतापूर्ण स्वभाव को देखकर बच्चे खुद को दोषी महसूस करते हैं, स्कूल का काम प्रभावित होता है और स्कूल का प्रदर्शन बिगड़ जाता है। जब युगल ने अलग होने का फैसला किया, तो दोनों पक्षों के परिवार के सदस्य समायोजन के लिए कूद पड़े, समायोजन का मुख्य ध्यान प्यारे बच्चों के भविष्य की ओर जाता है। तलाक के बाद बच्चों में एक नए तरह का विकास हुआ। अगर बच्चे पांच से आठ साल तक के हैं तो उन्हें सोने में दिक्कत, चिड़चिड़ापन और अलगाव की चिंता होती है। किशोरावस्था असुरक्षित महसूस करती है और समाज में लाचारी अपने माता-पिता के प्यार और स्नेह को खो देती है जिसे बाजार और दुनिया के किसी भी स्थान पर नहीं खरीदा जा सकता है। कुछ किशोर स्वयं को जोखिम उठाने वाली गतिविधियों जैसे शराब, सेक्स और आपराधिक गिरोह में शामिल होने आदि में संलग्न करते हैं। तलाक की समस्या केवल भारतीय महिलाओं की ही नहीं, विकसित राष्ट्रों में अधिक पीड़ादायक है। तलाक दोनों पक्षों के परिवारों को प्रभावित करता है। भारतीय समाज विवाह का पूर्ण समर्थन

करता है, अधिकांश लोग जीवन में एक बार विवाह करना चाहते हैं, समाज में दूसरी शादी को अनुचित माना जाता है। दुर्भाग्य से भारतीय समाज में तलाक की दर बढ़ रही है, एक अलग तरह की सामाजिक समस्या सामने आई है। समुदाय के नेताओं का यह कर्तव्य है कि वे कुछ ऐसे कानून बनाएं जो तलाक को रोक सकें। सामाजिक मर्यादाओं का सख्ती से पालन करना चाहिए। भारतीय समाज के लोगों का मानना है कि विवाहित जोड़े को एक-दूसरे के प्रति वफादार और वफादार होना चाहिए और यह जीवन भर की प्रतिबद्धता है, लोग इसे गले लगाते हैं और इसका समर्थन करते हैं।

उद्देश्य - तलाकशुदा महिलाओं की सामाजिक आर्थिक और मानसिक स्थिति का पता लगाना।

तलाक के प्रमुख कारणों का पता लगाना।

निर्दर्शन - शोध में जयपुर शहर की 20 तलाकशुदा महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण दैव निर्दर्शन द्वारा किया गया है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष

1. अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश तलाकशुदा महिलाएं 20 से 30 वर्ष की आयु वर्ग की हैं।
2. यह देखा गया है कि तलाक के अधिकांश मामले घरेलू हिंसा (46 प्रतिशत) के कारण होते हैं, तलाक का दूसरा प्रमुख कारण विचार में असंतुलन (40 प्रतिशत) होता है, और तलाक का तीसरा कारण दहेज (14 प्रतिशत) होता है।
3. अध्ययन में पाया गया कि 72 प्रतिशत तलाकशुदा महिलाओं के अपने परिवार के सदस्यों के साथ सामान्य संबंध हैं, 12 प्रतिशत के अच्छे संबंध हैं और 16 प्रतिशत के अपने परिवार के साथ संबंध खराब हैं।
4. यह भी देखा गया है कि तलाक के बाद 64 प्रतिशत आर्थिक उपयोगिता उनके माता-पिता द्वारा पूरी की जाती है। बाकी अपना खर्च वहन करते हैं।
5. बुनियादी जरूरतें पूरी न होने पर 48 प्रतिशत तलाकशुदा महिलाएं मदद के लिए अपने माता-पिता को बुलाती हैं और 52 प्रतिशत अलग-अलग क्षेत्रों में काम करती हैं।
6. अध्ययन में पाया गया है कि तलाक के बाद 45 प्रतिशत महिलाओं की देखभाल उनके माता-पिता करते हैं, 45

प्रतिशत महिलाएं स्वयं की देखभाल करती हैं और 10 प्रतिशत महिलाएं अपने बच्चों की देखभाल करती हैं।

7. अध्ययन में पाया गया कि तलाक के बाद 60 प्रतिशत महिलाओं को आर्थिक संकट और 40 प्रतिशत सामाजिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।
8. अगर हम मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बारे में बात करें तो अध्ययन में पाया गया है कि 94 प्रतिशत मानसिक तनाव के दौर से गुजरी हैं और 79 प्रतिशत भविष्य को लेकर चिंतित हैं।
9. अध्ययन में तलाक के बाद पुनर्विवाह को जानने का प्रयास किया गया, अध्ययन में पाया गया कि केवल 19 प्रतिशत महिलाएं ही पुनर्विवाह के पक्ष में हैं।

तलाक महिलाओं और पुरुषों दोनों को नकारात्मक रूप से नुकसान पहुंचाता है, पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक पीड़ित होती हैं। क्योंकि महिलाएं आमतौर पर बच्चों की कस्टडी लेती हैं, वे अधिक वित्तीय बोझ उठाती हैं और अपने जीवन में अधिक तनाव का सामना करती हैं।

तलाक अक्सर पुरुषों को अधिक स्वतंत्रता और कम जिम्मेदारियां देता है, जबकि तलाकशुदा महिलाओं को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

संदर्भ सूची

- पूजा कश्यप. टाइम्स ऑफ इंडिया सिटी पाटन 30 जून, 2010)
चैधरी, जे.एन. भारतीय समाज में तलाकरू विवाह व्यवधान और भूमिका समायोजन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, जयपुर, प्रिंटवेल पब्लिशर्स, 1988।
दीवान, पारस. पारिवारिक कानून, भारत में विवाह और तलाक का कानून। नई दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, 1983।
कपूर, रत्ना और ब्रेंडा कॉसमैन, भारत में कानून के साथ नारीवादी जुड़ाव, नई दिल्ली, सेज प्रकाशन, 1996।
रायकर-म्हात्रे, सुमेधा, भारत में तलाक और ईसाई विवाह, द इंडियन एक्सप्रेस 20 मई, 1997।
जॉन, क्राउच, द मैरिज मूवमेंट ए इंट्रोडक्शन टू डिवोर्स रिफॉर्म एंड अदर मैरिज इश्यूज। 1999

Corresponding Author

डॉ. नन्द किशोर कुमावत*

शोध निर्देशक अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर